# ‘‘मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक अनुशीलन’’

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ से

हिंदी साहित्य विषय में पीएच0डी0

की उपाधि हेतु प्रस्तुत

**शोध–सारांश**


शोध पर्यवेक्षक

**डॉ0 प्रीति राय**
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोधकर्ता

**हरकेश कुमार**
नामांकन संख्या–1384 / 18
हिंदी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ


**हिंदी विभाग**

**भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ**

**बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय**

**(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)**

**विद्या विहार, रायबरेली रोड,**

**लखनऊ 226025 (उ0प्र0)**

**2022**

# उद्घोषणा

मैं हरकेश कुमार यह घोषणा करता हूँ कि मैंने **''मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक अनुशीलन''** विषय पर शोध कार्य डॉ0 प्रीति राय, सहायक आचार्य हिंदी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के निर्देशन में पूर्ण किया है। प्रस्तुत यह शोध–प्रबंध पीएच0डी0 की उपाधि हेतु मेरा मौलिक शोध कार्य है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध इससे पहले इस विश्वविद्यालय अथवा किसी अन्य विश्वविद्यालय में पीएच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि यह शोध–प्रबंध पूर्णतया साहित्यिक चोरी (Plagiarism) से मुक्त है।

दिनांक–............................

**(हरकेश कुमार)**

शोध छात्र
नामांकन संख्या 1384 / 18
हिंदी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, विद्या विहार,
रायबरेली रोड, लखनऊ
226025 (उ0प्र0)

**CERTIFICATE**

This is to certify that the thesis titled "मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक अनुशीलन" submitted by Mr. Harkesh Kumar is an original research work and has not been previously submitted in part or full for the award of any other degree or diploma to this or any other university.

The thesis submitted to Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Lucknow satisfies all the requirements as stipulated in the Doctor of Philosophy (Ph.D.) Regulations amended in 2017 and it is fit for submission and evaluation for the award of the degree of Doctor of Philosophy of the University.

Date:……………………                                    Supervisor

Place:……………………

Head of the Department

# आभार

शोध कार्य से पूर्व शोध–विषय का चयन बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य होता है । अध्ययन काल से ही वरिष्ठ नवगीतकार **मधुकर अष्ठाना** के नवगीतों से मुझे बड़ा लगाव था उनके नवगीतों और समय–समय पर प्रकाशित उनकी समीक्षाओं ने मेरे मन में आग में घी का कार्य किया। परिणामस्वरूप मैंने **नवगीतकार** :'मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक अनुशीलन' विषय पर शोध कार्य करने का पूर्णतः मन बना लिया । उक्त दुष्कर कार्य को पूर्ण कराने में प्रो0 सर्वेश सिंह (अध्यक्ष हिन्दी विभाग, बी0बी0ए0यू0) और निर्देशिका डॉ0 प्रीति राय (सहायक आचार्य) ने पूर्णतः सहयोग किया। इस विशाल समुद्र को पार कराने में डॉ0 नमिता जैसल (सहायक आचार्य), डॉ0 बलजीत श्रीवास्तव (सहायक आचार्य) और प्रत्येक समस्या की घड़ी में साथ देने वाले डॉ0 शिवशंकर यादव का सहयोग अविस्मरणीय रहेगा साथ ही प्रो0 आर0पी0 गंगवार का भी मैं शुक्रगुजार हूँ। इस गहरे सागर में गोता लगाने के लायक बनाने वाले डॉ0 संतलाल (सहायक आचार्य) का आभार मैं किन शब्दों में करूँ। यह सामर्थ्य मुझमें कहाँ? समय–समय पर शब्द–शिल्पी मधुकर अष्ठाना जी से भी मार्ग दर्शन मिलता रहा। इनके लिये आभार या धन्यवाद जैसे सभी पर्यायवाची शब्द अत्यल्प हैं, उसमें से सभी औपचारिक शब्दों का प्रयोग करना उनके स्वाभिमान, सम्मान व आशीष को कमतर आंकना होगा। हमारी शोध कार्य के प्रति रुचि को परिपक्व बनाने में जमालुद्दीन (जमाल भाई, सहायक अध्यापक) के योगदान को हम कैसे भूल सकते हैं।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध को मैं अपनी माता जी एवं पिता श्री सुखराज को समर्पित करता हूँ। गाँव की गलियों से लेकर यहाँ तक पग–पग पर साथ देने वाले माता–पिता के ममतामयी आशीर्वाद मेरे लिये सदा प्रेरणा प्रदान करते रहेंगें। मैं अपने माता–पिता सहित भाइयों एवं बहनों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे पारिवारिक समस्या से मुक्त रखा। मैं अपनी अर्धांगिनी सरोज के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिसने यथाशक्ति सहयोग किया और पुत्री शिवांशी और पुत्र शिवांश के संरक्षण दायित्व से मुझे पूर्णतया मुक्त रखा। मेरे प्रेरणा स्रोत श्री धर्मेन्द्र वर्मा के प्रति आभार

व्यक्त करता हूँ जिन्होंने हमेशा सही मार्ग दर्शन प्रदान किया । इनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

शोध–प्रबंध के प्रेरणाश्रोत रही डॉ0 चम्पा श्रीवास्तव (सहायक आचार्य), डॉ0 किरन श्रीवास्तव (सहायक आचार्य), डॉ0 अजेन्द्र (सहायक आचार्य), डॉ0 संतोष पाण्डेय (सहायक आचार्य), डॉ0 आर0 वी0 मौर्या (सहायक आचार्य) के प्रति मैं नतशिर हूँ ।

मैं जाने–अनजाने उन सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ, जिन्होंनें शोध–प्रबंध पूर्ण होने तक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग किया है।

शोधार्थी

**हरकेश कुमार**

# प्राक्कथन

गीत एक आदिम विधा है, तथा नवगीत, गीत का अद्यतन रुप। नवगीत का जीवन के व्यापक सन्दर्भों से गहरा सम्बन्ध है। 'नव' शब्द नवता और 'गीत' शब्द परम्परा का वाहक होने के कारण नवगीत परम्परा और आधुनिकता दोनों को एक करती है। नवगीत में समकालीन विसंगतियों के साथ–साथ भारतीय सस्कृति की अनूठी पहचान दिखाई देती है । नवगीत हिन्दी कविता में एक शीतल वायु की भांति आया और नवगीतकारों ने हिन्दी कविता में व्याप्त छंदहीनता को खत्म करने को प्रतिबद्ध हुए और गेयता तथा लयात्मकता का सृजन किया लेकिन गीतकाव्य की इस अक्षुण्ण परम्परा को मान और प्रसिद्धि नही मिल सकी जिसका वह अधिकारी था क्योंकि इस पर यह आरोप लगाया गया है, कि यह आधुनिक विषमताओं को अभिव्यक्ति देने में असमर्थ है लेकिन नवगीतकारों ने आधुनिक विसंगतियों को व्यक्त कर यह सिद्ध कर दिया कि उनके द्वारा लगाये गये आरोप बेबुनियाद और निराधार हैं।

मूल्य साहित्य के लिए आवश्यक मानदण्ड है। प्रत्येक साहित्यकार का यह दायित्व है कि वह मानव–मूल्यों की सुरक्षा करे क्योंकि मानव–मूल्य निरपेक्ष सृजन साहित्य की श्रेणी में नही आ सकती है।

मधुकर अष्ठाना भारतीय जमीन और संस्कृति से जुड़े रचनाकार हैं। इस लिये मुख्यतः सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति उनकी सजगता सदा से रही है । उन्होंने जहाँ परम्परागत–मूल्यों को शब्दांकित किया है वहीं शहरी–जीवन के एकाकीपन, मोहभंग, व्यस्तता, सम्वेदनहीनता तथा तेजी से अवमूल्यित हो रहे मूल्यों को अपने नवगीत का कथ्य बनाया । नवगीतकार मधुकर अष्ठाना जीवन के प्रत्येक दिशा में सतत मूल्यान्वेषण करते हुए दिखाई देते हैं। मूल्यों की खोज ही उनका मुख्य ध्येय है। मूल्य विघटन के इस दौर में परम्पराओं के चटखने से नवगीतकार आहत है। इस कड़ी में शब्द–शिल्पी मधुकर अष्ठाना का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से अष्ठाना जी के नवगीत विसंगतियों और विद्रूपताओं पर चौतरफा प्रहार करते हैं। अष्ठाना उन गिने चुने नवगीतकारों में

से एक हैं जो नवगीत लिखते ही नही नवगीत में जीते भी हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक दोनों रूपों में इनके नवगीत जनसामान्य पर ही केन्द्रित रहते हैं।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध के शीर्षक ''मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक अनुशीलन'' पर शोध कार्य करने की अनुमति प्रदान कर 'बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय', लखनऊ की शोध–समिति ने मेरे उत्साह को बढ़ाया है। इसके लिये मैं समिति के सभी सदस्यों का आभारी रहूँगा।

इस शोध–प्रबंध को मैंने सात अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में नवगीत की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए गीत, प्रगीत और नवगीत की पारस्परिक संबद्धता को दर्शाया हैं साथ ही नवगीत के अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इसे अभ्युदयकाल, संघर्षकाल और उत्कर्षकाल में विभक्त करते हुए नवगीत के विकास के सोपान को भी दिखाया है जो तथ्यपरक और शोधपरक है।

शोध–प्रबंध के द्वितीय अध्याय में मधुकर अष्ठाना का जीवन परिचय और उनके नवगीत संग्रहों का परिचयात्मक विवेचन किया है। अष्ठाना का जीवन परिचय साक्षात्कार पर आधारित है।

तृतीय अध्याय में 'मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का भावसौंदर्य' प्रस्तुत है। इनके नवगीतों में उपस्थित भावसौंदर्य जैसे–मध्यमवर्गीय जीवन, वेदनानुभूति, मानवीय संकट, परम्परा बनाम आधुनिकता, लोकतत्त्व से जुड़ाव, सामाजिक परिवर्तन के स्वर, आधुनिक जीवन की विसंगति, स्वचेतनाभिव्यक्ति, सौंदर्यानुभूति और उसके स्वरूप की विषद् समीक्षा प्रस्तुत की गयी है। नवगीत विधा को स्थापित करने और उसे प्रतिष्ठा दिलाने में अष्ठाना जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्हें नवगीत का आधार स्तम्भ माना जाता है।

चतुर्थ अध्याय में मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में उपस्थित सांस्कृतिक सौंदर्य दिखाया गया है। इनके नवगीतों में समाहित सांस्कृतिक सौंदर्य को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया गया है– मूल्यबोध, प्रकृति और नारी, प्रणय और जिजीविषा, यथार्थता, नगर एवं गाम्यबोध, सांस्कृतिक पतनशीलता, लोकमंगल का भाव, युगबोध और अंधविश्वास। अष्ठाना ने अपने नवगीतों में मानव को अपनें मूल्य और संस्कृति

को बचाये रखने का आह्वान किया है। जिस प्रकार पछुआ हवा से भारत का प्रत्येक नागरिक प्रभावित है, उससे कवि अष्ठाना भी आहत हैं।

पंचम् अध्याय में मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में उपस्थित स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, युवा विमर्श और आर्थिक विमर्श की विवेचना प्रस्तुत की गई है। जहाँ स्त्री आज भी पुरूषों से कई पायदान नीचे है, वह आज भी अपने अधिकारों से वंचित है, वहीं दलित आज भी दाल जैसा पीसा जा रहा है और युवा अपने रोजगार को प्राप्त करने के लिये दर–दर की ठोकरें खाने के लिये मजबूर है। मंहगाई का यह आलम है कि आम जनमानस एक जून की रोटी के लिये भी मोहताज है। अष्ठाना जी ने अपने नवगीतों में आलोच्य उक्त विमर्शों को प्रमुखता से स्थान दिया है।

षष्ठम् अध्याय में 'मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का शिल्प वैशिष्ट्य' दिखाया गया है जिसमें अलंकार योजना, रसतत्त्व की प्रधानता, बिम्ब, प्रतीक एवं मिथक योजना, भाषा संस्कार और गीत रचना कौशल को समाहित किया गया है। यद्यपि नवगीत में अलंकारों का प्रयोग अस्वीकार है क्योंकि इसके प्रयोग से काव्य में वक्रता आ जाती है इसलिये नवगीत में सीधी–सादी और सरल भाषा का प्रयोग किया जाता है। इसी वजह से नवगीत आज आम जनमानस का कण्ठाहार बन पाया है। जब काव्य में खींच–खाँचकर अलंकारों का प्रयोग किया जाता हैं तब काव्य में दुरूहता आ जाती है जो आम आदमी की समझ से परे है। जब अलंकार भाषा के स्वाभाविक प्रवाह में सहज रूप में आ जाते है, वहां उन्हें अलंकृत नही माना जाता है। अष्ठाना के नवगीतों में इसी प्रकार के अलंकारों का प्रवाह हुआ है जो उनके नवगीतों में चार–चाँद लगा देते हैं। अलंकार सहित रसतत्त्व, बिम्ब, प्रतीक और मिथक योजना का अष्ठाना के नवगीतों में पूर्ण समावेश है, जिसका अंकन इस अध्याय में हुआ है।

सप्तम् अध्याय में '21वीं सदी के प्रमुख नवगीतकार और मधुकर अष्ठाना' का तुलात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। उन प्रमुख नवगीतकारों में डॉ ओमप्रकाश सिंह, प्रो0 देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', माहेश्वर तिवारी एवं नचिकेता हैं। इस अध्याय में

आलोच्य नवगीतकारों एवं मधुकर अष्ठाना का जो तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है वह निम्न बिन्दुओं पर आधारित है–

1–प्रतीक

2–मिथक

3–मूल्यबोध

4–सम्वेदना और सौंदर्य

5–अलंकार योजना

सप्तम अध्याय के अवसान पर उपसंहार दिया गया है जिसमें उपलब्धियाँ, मूल्यांकन और साक्षात्कार के अंश उद्धृत हैं। नवगीत के लिये स्वयं मधुकर अष्ठाना एक बहुत बड़ी उपलब्धि हैं। उनका जीवन, संघर्ष से दूर नही है। एक प्रकार से संघर्ष ही उनका जीवन है। जितना अधिक उनका संघर्ष है उतना स्तरीय उनकी रचनायें भी हैं। यद्यपि बहुत विषद उनका सृजन संसार नही हैं तथापि जितना भी है उससे यह स्पष्ट हो जाता हैं कि 'वे अवषाद, निराशा, अलगाव बोध, संत्रास भाव, मन की अंधकार भरी गुफाओं में भटकने वाली चेतना के कवि हैं।'

इस शोध–प्रबंध को पूर्ण करने में अनेक ग्रन्थों की सहायता ली गई हैं। ''मुधकर अष्ठाना के नवगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक अनुशीलन'' में डॉ0 आर0पी0 वर्मा द्वारा सृजित अभिनन्दन ग्रन्थ 'कालजयी नवगीतकारः मधुकर अष्ठाना' का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इसी के साथ 'नयी सदी के नवगीत' (डॉ0 ओमप्रकाश सिंह), 'समकालीन नवगीत की अवधारणा और जीवन मूल्य' (डॉ0 उर्वशी सिंह), 'नवगीत निकष' (डॉ0 उमाशंकर तिवारी, डॉ जगदीश सिंह), 'नवगीत के नये प्रतिमान' (राधेश्याम बन्धु), 'नवगीतः नये सन्दर्भ' (डॉ0 रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर') और 'नवगीत की अस्मिता' (कुमार रवीन्द्र) आदि जाने अन्जाने जिन साहित्यकारों का सहयोग मिला उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

इस शोध–प्रबंध में उल्लेखनीय योगदान महान प्रतिभा की धनी साहित्यकार **डॉ0 प्रीति राय** (सहायक आचार्य), और साहित्यकार **डॉ0 संतलाल** तथा शब्द–शिल्पी **मधुकर अष्ठाना** जी का रहा है। जिनके लिये आभार प्रकट करना औपचारिकता होगी। अतः उनके प्रति प्रणत निवेदन ही आभार है।

# ''मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक अनुशीलन'' अनुक्रमणिका


| क्र0सं0 | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1 | नवगीत की अवधारणा अर्थ और परिभाषा | i-x |
| 2 | गीत, प्रगीत और नवगीत की पारस्परिक संबद्धता | x-xiv |
| **प्रथम अध्यायः** | **नवगीत के सोपान** | **1–20** |
| (क) | अभ्युदय काल सन् 1935 ई0 से 1970 ई0 तक | 1–6 |
| (ख) | संघर्षकाल सन् 1971 ई0 से 2000 ई0 तक | 7–9 |
| (ग) | उत्कर्षकाल सन् 2001 से अब तक | 10–20 |
| **द्वितीय अध्यायः** | **मधुकर अष्ठाना का जीवन परिचय और उनके नवगीत संग्रहों का परिचयात्मक विवेचन** | **21–51** |
| (क) | जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि | 21–22 |
| (ख) | शिक्षा–दीक्षा | 22–23 |
| (ग) | परिवेशगत वातावरण | 23–24 |
| 1 | सामाजिक | |
| 2 | सांस्कृतिक | |
| 3 | राजनीतिक | |
| (घ) | पुरस्कार एवं सम्मान | 25–28 |
| (ड) | कृतियों का परिचयात्मक विवेचन | 29–51 |
| **तृतीय अध्यायः** | **मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का भाव सौंदर्य** | **52–116** |
| (क) | मध्यम वर्गीय जीवन का सौंदर्य | 52–63 |
| (ख) | वेदनानुभूति और मानवीय संकट | 63–75 |
| (ग) | परम्परा बनाम आधुनिकता | 76–81 |
| (घ) | लोकतत्त्व से जुड़ाव | 82–86 |
| (ड) | सामाजिक परिवर्तन के स्वर | 87–91 |

| | | |
|---|---|---|
| (च) | आधुनिक जीवन की विसंगति | 92–103 |
| (छ) | स्वचेतनाभिव्यक्ति | 104–109 |
| (ज) | सौंदर्यानुभूति और उसका स्वरूप | 110–116 |
| **चतुर्थ अध्यायः** | **मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का सांस्कृतिक सौंदर्य** | **117–180** |
| (क) | मूल्यबोध | **117–125** |
| (ख) | प्रकृति और नारी | 126–133 |
| (ग) | प्रणय और जिजीविषा | 134–137 |
| (घ) | यथार्थता | 138–144 |
| (ङ) | नगर एवं गाम्य बोध | 145–147 |
| (च) | सांस्कृतिक पतनशीलता | 148–155 |
| (छ) | लोकमंगल का भाव | 156–159 |
| (ज) | युवाबोध | 160–168 |
| (झ) | अंधविश्वास का विरोध | 169–172 |
| (ञ) | प्रकृति का मानवीकरण | 173–177 |
| (ट) | दार्शनिक चेतना | 178–180 |
| **पंचम् अध्यायः** | **मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में विमर्श** | **181–209** |
| (क) | स्त्री विमर्श | 181–188 |
| (ख) | दलित विमर्श | 189–194 |
| (ग) | युवा विमर्श | 195–201 |
| (घ) | आर्थिक विमर्श | 202–209 |
| **षष्ठम् अध्यायः** | **मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का शिल्प वैशिष्ट्य** | **210–237** |
| (क) | अलंकार योजना | 210–213 |
| (ख) | रसतत्त्व की प्रधानता | 214–217 |
| (ग) | बिम्ब, प्रतीक एवं मिथक योजना | 217–228 |

| | | |
|---|---|---|
| (घ) | भाषा संस्कार | 229—232 |
| (ङ) | गीत रचना कौशल | 233—237 |
| **सप्तम् अध्याय:** | 21 वीं सदी के प्रमुख नवगीतकार और मधुकर अष्ठाना (एक तुलनात्मक अध्ययन) | **238—274** |
| (क) | डॉ0 ओमप्रकाश सिंह एवं मधुकर अष्ठाना | 238—247 |
| (ख) | प्रो0 देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' एवं मधुकर अष्ठाना | 248—257 |
| (ग) | माहेश्वर तिवारी एवं मधुकर अष्ठाना | 258—265 |
| (घ) | नचिकेता एवं मधुकर अष्ठाना | 266—274 |
| | **उपसंहार** | **275—293** |
| (क) | उपलब्धियाँ | 276—277 |
| (ख) | मूल्यांकन | 278—280 |
| (ग) | साक्षात्कार के अंश | 281—288 |

# शोध–सारांश

## "मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक अनुशीलन"

**प्रस्तावना –** नवगीत अपने नये प्रतिमानों से सज्जित विगत साठ वर्षों से अपनी विकास यात्रा पर अग्रसर है । इस यात्रा में बहुत से प्रतिभावान सहयोगी इसके काफिले में जुडते चले गये । आज नवगीत की लोकप्रियता षिखर बिन्दु तक पहुँच रही है । अपने समय के यथार्थ को अपने में समाये हुए नवगीत भाषा और अन्तर्वस्तु के नये क्षितिज तलाषने में अपनी असाधारण क्षमता का परिचय दे रहा है।

लोक चेतना के स्तर पर अन्वेषी रचनाकारों ने नवगीत में बहुजन समाज की सहभागिता सुनिष्चित की है। वनांचलो और ग्रामांचलों में गुमनामी के अंधकार में जीवन यापन करने को मजबूर वनवासियों–दलितों का अपनी अभिव्यक्ति में परिणित होने के अवसर प्रदान किये हैं । नवगीत की इस सारस्वत अभियान को गति प्रदान करने में जिन प्रातिभ प्रणेताओं का असाधारण योगदान रहा है। उनमें मधुकर अष्ठाना का नाम अपेक्षित सम्मान प्राप्त करता रहा है।

मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य है सामाजिक चेतना । अष्ठाना जी ने अपने समय के समाज को बहुत ही सूक्ष्म–दृष्टि से पढने और समझने का प्रयास किया है । उनके सामाजिक यथार्थ की अनुभूति प्रायः भोगी हुई स्थितियों पर अवलंवित है, साथ ही परिकीय अनुभवों को आत्मसात कर उन्हें अपना बना लेने की क्षमता का अद्‌भुत परिचय प्रदान करती है।

## उद्‌देष्य–

मधुकर अष्ठाना ने अनेक विषयों को लेकर अपने नवगीत का प्रणयन किया है। इनके नवगीतों में जहॉ एक तरफ बाषंती बयार है वहीं दूसरी तरफ वाताचक्र का उन्मेष भी है। प्रस्तुत षोध प्रबन्ध में मधुकर अष्ठाना के साथ ही इनके नवगीतों का सम्यक विष्लेषण प्रस्तुत किया गया है, साथ ही इनके नवगीतों के विभिन्न आयामों को परखा भी गया है । अष्ठाना जी के नवगीतों के सामाजिक और सांस्कृतिक अनुषीलन के साथ–साथ इनके षिल्पगत वैषिष्ट्य पर भी प्रकाष डाला गया है। इनकी आंचलिकता, जनपदीय चेतना तथा नवगीतों की वैकासिक यात्रा का भी लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया है।

## पूर्ववर्ती शोध कार्य –

मधुकर अष्ठाना के नवगीतों पर अभी तक किसी भी विष्वविद्यालय में पूर्ण शोधकार्य नही हुआ है।

## शोध विषय का महत्व–

गीत बेजान नही होते उसमें समय का स्पन्दन होता है । वे समाज–जीवन एवं

लोक–व्यवहार में रचे बसे हैं। वे किसी जीवन्त समाज के परिचायक है। सुर, लय ,ताल , आरोह–अवरोह और गीत बोलने की एक विषेष षैली प्रत्येक व्यक्ति को अपनी तरफ आकर्षित करती है । इन गीतो के माध्यम से किसी भी विषय – वस्तु को सरलता से न केवल अभिव्यक्त किया जा सकता है बल्कि कहीं अधिक बोधगम्य भी बनाया जा सकता है । गीत वातावरण की नीरसता एकरसता , ऊब और भारीपन को दूर कर सरसता उमंग और उत्साही परिवेष का निर्माण करते हैं। मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में माटी की महक है , लोक की गमक है, और सामाजिक प्रवाह का कलरव भी। गीत समकालीन संस्कृति की धडकन हैं, समाज और राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं।

मधुकर अष्ठाना का पूरा साहित्य टूटन , विखराव , विसंगति–विद्रूपता , मूल्यहीनता , मोहभंग , असंतोष, अतृप्ति ,घृणा , संघर्ष और टकरावादि से भरा पडा है। रचनाकार ने यथार्थ का सिर्फ अंकन ही नही किया बल्कि प्रतिरोध भी किया है। प्रतिरोध और प्रतिबद्धता के स्वर को इनकी रचनाओं मे बडी सिद्दत के साथ महसूस किया जाता है इन्होंने प्रतिबद्धता और प्रतिरोध को अपनी कविता (नवगीत) का आधार बनाया।

इनके समय में ' बोल्डनेस ' के नाम पर सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए अष्लील प्रसंगो का चित्रण भी खूब हुआ , छपने पुरस्कृत होने की चाह में कवियों को अवसरवादी बनाया । अपने – अपने गुट और षिविर बने , संवेदना , मनुष्यता की बात करने वाली साहित्यिक विरादरी तमाम तरह के अन्तरविरोधो से भर गयी । यही मधुकर अष्ठाना का युग एवं परिवेष है।

ऐसे दौर में अष्ठाना की रचनाएं एक षुकून एवं ताजगी प्रदान करती हैं । अत्मीयता को जिंदा रखने की पुरजोर कोषिष करती हैं। आत्मघाती प्रगति पथ पर आते–जाते आदमी को आगाह करती है।

वास्तव में कवि स्वयं अंधेरे से जूझकर दूसरों को रोषनी प्रदान करता है । अष्ठाना जी कहते हैं–

''अंधेरे कर रहे रोषन

तमष को काटते हैं हम

गया जब सूर्य अपने घर

उजाला बॉटते हैं हम

भले ही दीप माटी के

बहुत लघु रूप है अपना

मगर सीखा है हमने

पहरूआ बन

रात भर जगना।''

## अध्याय विभाजन

सुविधा की दृष्टि से मैने षोध –प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभक्त किया है–

1– नवगीत की अवधारणा अर्थ एवं परिभाषा

2– गीत , प्रगीत और नवगीत की पारस्परिक सम्बद्धता

सन् 1958 ई0 में पहली बार नवगीत षब्द चर्चा में आया । गीतांगिंनी की भूमिका में उसके संपादक राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने नयी गीतों के लिए पहली बार 'नवगीत' षब्द का प्रयोग किया किन्तु उन्होंने इस प्रयास को सिर्फ नामकरण तक ही सीमित रखा । उन्होंने अपनी भूमिका में नवगीत के जिन प्रतिमानों का उल्लेख किया, वे परवर्ती नवगीत को परिभाषित करने में न केवल असफल सिद्ध हुए वरन् एक भ्रम की स्थिति भी उत्पन्न की।

## नवगीत का अर्थ –

नवगीत का षाब्दिक अर्थ है नया गीत । यदि हम नवगीत को परिभाषित करें तो 'नयी कविता के षिल्प से भिन्न छंद–प्रसंग से जुडी यथार्थ–बोध की कविता को नवगीत नाम दिया जा सकता है।' नवता की षुरूआत तो छायावादी युग के कवियों ने ही कर दी थी।

इस लिए नवगीत का उद्गम ढूंढने के लिए निष्चित रूप से हमें छायावादी युग में जाना पडेगा क्योकि नवगीत का बीज और कहीं नही छायावाद युग की कविता में ही विद्यमान है। और महाराणा निराला ही ' नयी कविता ' की भांति 'नवगीत' के भी प्रथम उन्नायक हैं। निराला ने ही पहली बार परम्परागत भाषा , घिसे–पिटे छंदो एवं भावों के प्रति विद्रोह करके आम जनता की भाषा में बिम्बों एवं प्रतीकों के माध्यम से यथार्थ जीवन की कटु–तिक्त अनुभूतियों को स्वर देने का सार्थक और सकल प्रयास किया ।

निराला ने अपनी नवोन्मेष षालिनी प्रतिभा और समसामयिक यथार्थ की गहन सूझ–बूझ के बल पर अपनी रचना में भविष्यत रचना का आभास दिया है। उदाहरण के लिए नयी कविता का प्रारम्भ भले ही प्रयोगवादी दौर के बाद 1950 के आसपास हुआ हो , निराला ने सन् 1935 ई0 में ही मुक्त छंद में जिस 'तोडती पत्थर' षीर्षक की रचना की थी , उसमें नई कविता की भंगिमा वर्तमान थी । इसी प्रकार 'नवगीत' का जन्म भले ही 1950 के बाद हुआ हो , 'अनामिका', 'बेला' , और नये पत्ते की गीत पंक्तियों में उसका बीज वर्तमान है।

नवगीत को देवेन्द्र कुमार ने इस प्रकार परिभाषित किया है–''नवगीत नये मानव मन की प्रतिक्रिया है, निर्मम नियत की अभिव्यक्ति है।''

वहीं आधुनिक जीवन बोध की सार्थक अभिव्यक्ति के लिए कृष्ण तिवारी ने समसामयिक जीवन सन्दर्भों को प्रतीक रूप मे गृहण किया है । नवगीत की परिभाषा देते हुए कहते हैं– ''आधुनिक बोध और जातीय अनुभव के सहज सामन्जस्य से ही नवगीत की सृष्टि हुई है । ''डॉ0 षम्भुनाथ सिंह ने एक स्थान पर नई कविता और नवगीत में अन्तर करते हुए लिखते हैं– ''दोनों का स्थूल अन्तर इतना ही है कि 'नयी कविता' मुक्त छंद में लिखी जाती है और 'नवगीत' छंदोबद्ध होता है। ''गीत की भावुकता और कठोरता दोनों को डॉ0 षम्भुनाथ सिंह ने जिया और जाना। वे कुछ समय 'नयी कविता' के जंगल में भटक गये परन्तु लौट कर आये तो 'नवगीत' का चमन उन्हे अधिक मन–भावन लगा ।

## 2–<u>गीत , प्रगीत और नवगीत की पारस्परिक सम्बद्धता–</u>

सन् सन्तर के बाद की कविता आधुनिक बोध से सम्पृक्त हुई । पिछले चरण की जनचेतना , आंचलिकता और लोक सम्पृक्ति के बोध से सम्बन्धित थी । लेकिन सन् सन्तर के दषक की कविता अपनी उक्त विषेषताओं के साथ पूर्णतया आधुनिक बोध की कविता बन गई । जो यथार्थ के नाम पर नग्नता के वरण तक से भी परहेज नही करती ।

आलोचकों ने इस चरण के कवियों की सोच को आयातित सोच और उनकी संवेदना को कृत्रिम संवेदना तक कह डाला षायद यही कारण है कि साठ – सन्तर के दषक की कविता में बिखराव हो गया । अब तो उन्हें 'नई कविता' नाम भी सार्थक नही लगता । अब कवियों ने इसे अनेक नामों से सम्बोधित करना प्रारम्भ कर दिया । लोग इसे भूखी कविता , अकविता , नंगी कविता , सहज कविता, अस्वीकृत कविता , युयुत्स कविता आदि नामों से पुकारने लगे । अब नये – नये कवि पैदा हो गये हैं लय – छंद से मुक्त होकर नयी कविता में गद्य–पद्य की छोटी–बडी पंक्तियां लिख कर उसे ही नयी कविता का नाम दे दिया गया ।

सन् 1971–2000 का समय नवगीत के संर्घष का समय था । इस समय नवगीत अपने अस्तित्व को बचाने के लिये संघर्ष कर रहा था। सन् 2000 से अब तक का समय नवगीत के 'उत्कर्ष का काल' है । जहां तक मुझे लगता है कि सन् 2000 से अब तक नवगीतों की प्रवृत्तियों में कोई विषेष बदलाव नही हुआ है। बल्कि पूर्व निर्धारित मान्यताओं पर ही आगे बढ रहा है । वर्तमान नवगीतों में एक और विषेषता अवष्य झलकती है, वह है पाष्यात्य ढंग की आधुनिकता के विरूद्ध विद्रोह और आक्रोष की भावना की अभिव्यक्ति ।

भारतीय स्वाधीनता के बाद प्रयोगवादी कवियों द्वारा परम्परा से विद्रोह के रूप में कई प्रयोग अन्वेषित हुए जिसका व्यवस्थित रूप 'नई कविता' ने ग्रहण किया । 'नई कविता' के कवियों में रचनात्मक संकल्प और उच्च मनोबल विद्यमान था। उनके विषय उनकी चित्रण पद्धति और उनके लहजे सभी प्रयोगवादियों की अपेक्षा अत्यधिक आधुनिक, नए और यथार्थ जीवन के निकट थे । यहां न नारेबाजी थी, न कुण्ठाएं , न रहस्यात्मकता । एक नए खुलेपन के साथ नई कविता ने लोक सम्पृक्ति प्रदान की, किन्तु 1960 तक आते – आते इसमें जटिलता आने के कारण–गत्यावरोध पैदा होने लगा । इसके ऐतिहासिक कारण जो भी रहे हो परन्तु नई कविता की यह हालत बड़ी चिन्ताजनक थी । इसी समय हिंदी काव्याकाष में एक नई–नई काव्यधाराओं का जन्म हुआ । जैसे– गीत, प्रगीत और नवगीत आदि ।

नवगीत सही माइने में कोई काव्य आन्दोलन नही है। जैसे दूसरे थे । इन सबकी अपनी–अपनी घोषणाएं थी किन्तु नवगीत का कोई घोषणापत्र नही था । बाद में बनते–बनाते रहे, इससे उन्हें घोषणा नही कहा जा सकता । जहां ये समस्त काव्यान्दोलन बौद्धिक धारणाओं से प्रेरित–प्रवर्तित रहे वहां नवगीत की काव्यविधा जीवन के सामयिक और सार्वभौम यथार्थ से जुड़कर आज के मनुष्य के सुख–दुख, राग–विराग, उल्लास–विषाद के साथ चल रही है। जीवन में न तो सुख ही सुख है और न ही दुख ही दुख। जीवन कभी ऐकांतिक नही होता है। इसलिए नवगीत जीवन की दोनों स्थितियों का विधायक रहा है। साथ ही नवगीत कविता में रचनात्मकता की दृष्टि से बहुत कुछ छान्दसिक परम्परा का भी है। आधुनिकतावादी कविता में

प्रकृति और परिवेष को खासी प्रमुखता मिली है। लेकिन नवगीत आधुनिकतावादी ज्वालामुखी के विष्व में सत्य और अहिंसा का पक्षधर हैं। नवगीत की रचनाषीलता की पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए यह देखा जाना जरूरी है कि परम्परागत गीत–सृजन के अन्तर्गत गीतों की बदलती हुई वें कौन सी अवस्थाएं रहीं जिनमें व्यक्तिगत जीवन की कुण्ठा वाले गीतों की जगह नवगीत ने आधुनिक जीवन में गीत की मूल्योन्मुखी चेतना को आत्मसात किया। नवगीत ने सारी व्यावसायिक प्रवृत्तियों को छोडकर रचना की और नई चुनौतियों को स्वीकारा । जहां कुछ लोगों को छायावादी, प्रयोगवादी कविता भी आधुनिक जीवन के परिवेष को व्यक्त करने में असमर्थ लग रही थी, वहीं नवगीत ने बदलते हुए परिदृष्य को सवांरने और नया रूप देने का प्रयत्न किया इसलिए नवगीत कोई वैयक्तिक सृजन विद्रोह न होकर एक संघबद्ध आन्दोलन बनकर सामने आया । नवगीत तो विद्यमान वातावरण में जीवन के सार्थक तत्वों की सहज स्वीकृति का एक नाम है। इस प्रकार नवगीत ने गीत, प्रगीत और नई कविता के सांझा चूल्हे के ताप से अपना रूप निर्मित किया ।

प्रत्येक समर्थ्य नवगीतकार अपने प्रारम्भिक समय में पहले गीतकार ही रहा है। बड़बोली बोलने वाले कुछ को छोड़कर। भक्तिकाल में चाहे वें सूर, तुलसी, मीरा हो या फिर कबीर हो, ये सब जब–जब गीत सृजन में बढ़ते गये गीतों का रचाव, उसका कलेवर, उनका स्पन्दन, उनकी षैली नया होता गया और इन सभी ने लोक–जीवन, लोक चेतना और लोक स्पन्दन से प्रेरित होकर नित नया ही सृजन किया ।

वह सूर जो प्रारम्भ में घिघियाने की वाणी में निरीह मनः स्थितियों के राग अलापता था, वही सूर 'सूरसागर' में आकर कृष्ण के निमत्त लोक–लीला का वर्णन करते हुए जिस गीत रचना में लीन हुआ वह उसको पूर्ववर्ती गीत धारा की एक छलांग के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिये । 'अबकी राखि लेहु भगवान' जैसे गीतों के रचनाकार 'ष्याम हमारे रे मधुबनिया/अब हरि गोकुल काहे को आवत' जैसे लोकोल्लासी गीतों की रचना करता है और यह उल्लास वह अपने समय के लोकोस्वरों, लोक छन्दों से ग्रहण करता है।

वहीं कबीर का तो कहना ही क्या ? वे जहां से षुरू होते है वहीं से नये लगते हैं। क्या नही है कबीर की पद (गीत) रचना में जिसे नया न कहा जाये ?

छायावाद को मुख्यतः प्रगीत युग कहा जाता है। ये प्रगीत कहीं मुक्तछन्द में अगेय तो कहीं गेय हैं किन्तु इनकी विषेषता यह है कि ये गीत प्रगीतात्मक तत्वों से युक्त है। हां ! एक बात जरूर हुई कि इस काल के गीतों मे वैयक्तिता की प्रधानता रही । यही वह तत्व है जो छायावादी गीतों की जड़ता का कारण है और आगे की कविता (नई कविता) का मूलाधार बना । छायावाद

के चारों स्तम्भों ने इस युग की गीत धारा को अत्यन्त समृद्धि किया छायावाद की कविता अपने अन्तिम चरण में आकर सूक्ष्म से स्थूल की तरफ सरककर मांसल और नितांत निजतापरक हो गई। बच्चन, नरेन्द्र षर्मा, अंचल जैसे गीतकार इस काल की उपज हैं।

छायावादी युग के समापन के साथ विष्व में और खासकर हमारे देष में कई प्रकार की समस्यायें उभर कर आईं जिनका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा 1936 ई0 में 'प्रगतिषील लेखक संघ' की स्थापना हो चुकी थी जिसके द्वारा सारे देष में लेखक को प्रगतिषीलता की दिषा में प्रोत्साहित होने का वातावरण मिला । छायावादी काव्य में सामाजिक यथार्थ का सच्चा स्वरूप प्रकट नही हो पा रहा था क्योंकि वह रूमानी या कल्पनाप्रवण होकर रह गया था, जिससे विरक्ति होना स्वाभाविक था । अतः नवमानवतावाद की भावना ने जोर पकड़ा जिसे मार्क्सवादी जीवन–दर्षन ने दिषा दी। सामाजिक यथार्थ के इस स्तर को रामविलास षर्मा, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, षिवमंगल सिंह 'सुमन' जैसे समर्थ कवियों ने षानदार की गीतों द्वारा समृद्ध किया। इनके गीतों की भंगिमाएं और विषय बिल्कुल ही अलग किन्तु युगानुरूप थे।

प्रयोगवादी कविता ने बौद्धिकता और यथार्थ के नाम पर भावुकता को बचकानेपन की संज्ञा दी और एक प्रकार से ऐसे वातावरण का निर्माण किया जो गीत विरोधी था। यह अलग बात है कि प्रयोगवाद के पुरोधा अज्ञेय ने भी गीतों की रचना की है। साथ ही तारसप्तक (1943) और दूसरा तारसप्तक (1951) के कवियों ने भी गीत काव्य की रचना की और इसे नयेपन से नवाजा यहां तक आते–आते एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि गीत विधा ने प्रत्येक काल में अपने परिवेष के साथ जो संगत और उपयोगी लगा उसे स्वीकारा और असंगत एवं अनुपयोगी को तीव्रता से नकार दिया।

'नई कविता' कविता का कुछ ऐसा रूप लेकर आई जिसमें बौद्धिकता छन्दमुक्ति और लयहीनता की स्वछन्दता थी। वैसे एक खुले मंच में इसके अन्तर्गत तरह–तरह के अपने अनुभवों को अभिव्यक्ति दे रहे थे किन्तु बौद्धिकता के कारण रचनाकारों की सहजता क्रमषः उपेक्षित होने लगी। यह कम आष्चर्य की बात नही कि जो नई कविता के सैधांतिक अधिवक्ता थे, वे स्वयं तो रोमानियत और नवमानवतावाद की सन्दर्भ भूमियों से जुडे हुए थे, पर उनके अनुगामी कविता और बौद्धिकता को एक दूसरे का पर्याय मान बैठे थे। इसलिये दुरूह और जटिल अनुभूतियों के नाम पर वे जो सच रच रहे थे वह कविता कम कविताभास अधिक था। बहुत कम रचनाकार ऐसे थे जो रचनागत सहजता के साथ गतिषील हों। ऐसी स्थिति में 'नई कविता' के साथ गीत रचना का प्रष्न ही नही उठता। गीतों की रचना करना तो दूर, तुकान्त छन्दों में रचना करने वाले भी हेय दृष्टि से देखे जाने लगे। फलतः गीत रचना होना बन्द हो

गई। नई कविता के उदय से लेकर आठ दस वर्ष तक यह स्थिति स्थिर बनी रही। इस बीच तारसप्तक द्वितीय और तारसप्तक तृतीय के प्रकाषन के बाद कुछ कवियों ने गेय और तुकान्त छन्दों को अपनाकर लोग भूमि के अनुभवों के आधार पर जडता को तोड़ने का उपक्रम किया। इसका नतीजा यह हुआ कि कविता के जड़ वातावरण में एक बार फिर सुगबुगाहट हुई और जो लोग स्वाभाविक तौर पर काव्य निर्माण के मार्ग पर थे, उन्होंने नई कविता की इस रूढ़िग्रस्त हदबन्दी को नए सिरे से चुनौती दी जिसका सबसे पहला सोपान '**नवगीत**' था।

नवगीत को स्वीकारे बिना कविता का अस्तित्व अधूरा ही रहेगा। यह सूत्र परवर्ती काव्य में खोजना होगा। गीत, प्रगीत और नई कविता के सांझा चूल्हे को नवगीत ही अपनी लोकोन्मुखी आंच से बचाये रख सकता है और युगानुरूप अपनी रचनात्मकता द्वारा वह समकालीन चेतना को नये–नये आयाम भी दे सकता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गीत, प्रगीत, नई कविता और नवगीत पारस्परिक सम्बद्ध हैं।

## <u>प्रथम अध्याय</u>

नवगीतः विकास के सोपान

(क) अभ्युदय काल सन् 1935–1970 तक

(ख) संघर्ष काल सन् 1970–2000 तक

(ग)उत्कर्ष काल सन् 2001 से अब तक

आज के नवगीत में जो जनचेतना व्याप्त है उसके बीज द्विवेदी युग में ही बो दिये गये थे । 'सरस्वती' पत्रिका के 1915 के अप्रैल अंक में बद्दरीनाथ भट्ट का 'प्रार्थना' षीर्षक से एक 'प्रगीत' प्रकाषित हुआ, इसमें भक्ति भावना भी थी और राष्ट्र–भक्ति भी। निराला के 'वीणा वादिनी वर दे' गीत पर इस 'प्रार्थना' गीत का प्रभाव माना जाता है। पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला द्वारा रचित 'वह तोडती पत्थर पत्थर' (1935) से ही नवगीत का प्रारम्भ माना जाता है । जिस प्रकार निराला ने नवगीत की पीठिका के निर्माण में अपना योगदान दिया उसी प्रकार पन्त भी। पंत की 'ग्राम्या' नें ही छायावादी गीतों की कड़ी को आगे बढाकर उसे लोक धरातल प्रदान किया था । लोकगंध ही नवगीत की प्रमुख विषेषता है।

नवगीत के उद्भव की प्रवृत्तियों की सीमा रेखा डॉ0 षम्भुनाथ सिंह ने जो 1935 ई0 से प्रारम्भ हुई प्रतिपादित की है और नवीनता की उद्भावना के लिये उन्होंने दो नाम लिये 'निराला' और 'माखन लाल चतुर्वेदी' । माखनलाल चतुर्वेदी ने तो 1930 ई0 में लिखी अपनी प्रसिद्ध रचना 'कैदी और कोकिला' में ही कविता और गीत की परम्परागत विषय–वस्तु से अलग वास्तुविक भाव–भूमि पर व्यंग्य से परिपूर्ण गीत की भूमिका डाल दी थी । चतुर्वेदी जी की एक

पंक्ति – ''क्या देख न सकती जंजीरो का गहना ?

हथकडियां क्यों ? यह ब्रिटिष राज का गहना''

## (ख) <u>संघर्ष काल सन् 1970 ई0 से 2000 ई0 तक</u> –

चन्द्रदेव सिंह द्वारा सम्पादित 'पॉच जोड़ बॉसुरी' संग्रह सन् 1969 ई0 में प्रकाषित हुआ जिसमें 47 से 67 के बीच प्रकाषित गीतों का संकलन प्रस्तुत हुआ। इस गीत संकलन में 40 कवियों के गीत संकलित हैं। सन् 1980 ई0 'नवगीतः सर्जन और समीक्षा' पुस्तक ने भी इस दिषा को अग्रसर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया । सन् 1968 ई0 तक 'नवगीत' एक सर्वस्वीकृत नाम बन गया था और उसे गीत की नवीनतम् विधा के रूप में व्यापक स्वीकृत मिल चुकी थी। सन् 1970 से 2000 के मध्य लिखे गये नवगीत का सभी दिषाओ में विकास हुआ। आठवें –नौवें दषक में नवगीत को प्रतिष्ठित करने का श्रेय डॉ0 षम्भुनाथ द्वारा सम्पादित नवगीत दषक भाग – 1,2,3 का बड़ा योगदान है।

नवगीत दषक भाग – 1 (1982) – इस संग्रह में नईम , सोम ठाकुर , देवेन्द्र षर्मा 'इन्द्र' , देवेन्द्र कुमार, भगवान स्वरूप 'सरस' उमाकान्त मालवीय , षिवबहादुर सिंह भदौरिया , रामचन्द्र 'चन्द्रभूषण', ठाकुर प्रसाद सिंह तथा षम्भुनाथ सिंह के गीत संकलित हैं।

नईम जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करते हैं–

''षाम किसी ढाबे में सिकती हुई जल गई

काल गर्ल सी रात उम्र के पूर्व ढल गयी''

सन् 1986 ई0 मे डॉ0 षम्भुनाथ सिंह ने 'नवगीत अद्धषती' का सम्पादन किया । इसमें निराला , माखनलाल चतुर्वेदी से लेकर यूवा पीढी की नवगीतकारों तक कुल 81 कवियों के 243 गीत संकलित हैं।

सन् 1970 के बाद तथा सन् 2000 तक कुछ कवियों एवं उनकी रचनाओं में बालस्वरूप 'राही' कृत 'जो नितांत मेरी है' (1971) ' इन्द्र कृत 'पथरीले षोर में' (1972), कुंवर बेचैन कृत 'पिन बहुत सारे' (1972), नचकेताकृत 'आदमकद खबरें '(1973) रमेष रंजक कृत 'हरापन नही टूटेगा' (1974), षम्भुनाथ सिंह कृत 'दर्द जहॉ नीला है' (1977), इन्द्र की ' पंख कटी मेहराबें 'वीरेन्द्र मिश्र कृत 'झुलसा है छायानट धूप में' (1980), कुमार रविन्द्र कृत 'आहत है वन' (1984), रमेष रंजक कृत 'दरिया का पानी' (1984), गुलाब सिंह का 'धूल भरे पांव' (1992) में प्रकाषित हुए।

नवगीत के विकास का यह संक्षिप्त इतिवृत्त यह प्रमाणित करने के लिये पर्याप्त है कि नवगीत ने यात्रा वृद्धि के साथ अपने स्तरोन्नयन में भी काफी विकास किया है। इस विकास में पत्येक नवगीतकार का योगदान है।

## (ग) उत्कर्ष काल सन् 2001 से अब तक –

सन् 2001 में प्रकाषित विनोद श्रीवास्तव का नवगीत संग्रह 'अक्षरों की कोख मे' 21 वीं सदी के प्रथम दषक के प्रारम्भ में लिखा गया है। इस संग्रह में महानगरीय संत्रास की त्रासदपूर्ण स्थितियों का यथार्थ अंकन हुआ है–

''जो आग नही दिखती जल में

वह हम में हो तो बात बनें''

सुधांषु उपाध्याय द्वारा 2002 में प्रकाकषित उनके नवगीत संग्रह 'समय की जरूरत है यह' माहेष्वर तिवारी कृत 'नदी का अकेलापन' (2002), डॉ0 ओम प्रकाष सिंह का एक नवगीत संग्रह 'जंजीरों को तोड़ो' (2002) में प्रकाषित हुआ । वर्ष 2003 में भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाषित वरिष्ठ नवगीतकार तथा प्रगतिषील कवि नईम का नवगीत संग्रह 'लिख सकूं तो' खासा चर्चित रहा। सन् 2003 मे ही कुमार रवीन्द्र कृत 'सुनो तथागत' प्रकाषित हुआ । वरिष्ठ नवगीतकार षांति सुमन कृत 'पंख–पंख आसमान' (2004) प्रकाषित हुआ। बुद्धिनाथ मिश्र कृत षिखरिणी (2005) , सुधांषु उपाध्याय कृत 'पुल कभी खाली नही' (2006) प्रकाषित हुआ।

सन् 2001 से अब तक का समय नवगीत के उत्कर्ष का काल था । जहां तक मैंने अध्ययन किया है सन् 2001 से अब तक नवगीतों की प्रवृत्तियों में कोई विषेष बदलाव नही हो पाया है।

## द्वित्तीय अध्याय

मधुकर अष्ठाना का जीवन परिचय और उनके नवगीत संग्रहों का परिचयात्मक विवेचन

1– (क) जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

(ख) षिक्षा –दीक्षा

(ग) परिवेषगत वातावरण

(I) सामाजिक

(II) सांस्कृतिक

(III) राजनीतिक

2– पुरस्कार एवं सम्मान

3–कृतियों का परिचायात्मक विवेचन

श्री जगन्नाथ अस्थाना के प्रथम पुत्र के रूप में मधुकर अष्ठाना का जन्म 27 अक्टूबर 1939 ई0 को ग्राम मझगवां, रानी का सराय जिला आजमगढ़ में हुआ था । उनकी माता श्रीमती विद्यावती की आकस्मिक मृत्यु, पुत्र के लगभग एक वर्ष के होते ही हो गयी थी । गृहस्थी का आधार केवल कृषि थी जिससे दोनों समय भोजन की व्यवस्था कठिनाई से हो पाती थी। बचपन इस प्रकार घोर अभाव में व्यतीत हुआ। प्रारम्भिक षिक्षा गांवों में तथा 9–10 की पढाई के लिए चाचा के साथ लखनऊ आकर DAV कॉलेज मे प्रवेष लिया । चाचा के कोई संतान न होने के कारण इन्हें आना पडा था लेकिन जैसे ही डेढ वर्ष के बाद चाचा को पुत्र लाभ हुआ इन्हें पुनः गांव लौटना पडा । इस तरह गांव से ही किसी तरह बी0ए0 की डिग्री

प्राप्त किया । और नौकरी की खोज में लग गये । इस तरह 1958 ई0 में प्रथम विक्री कर विभाग में क्लर्क के पद पर राजकीय सेवा में आए। कुछ समय पष्चात नौकरी छूट गई और पुनः PWD विभाग में आए। सन् 1960 ई0 में उन्होनें PWD विभाग से त्यागपत्र देकर मलेरिया विभाग में सर्विलेन्स इंसपेक्टर के पद पर आसीन हुए । कुछ समय पष्चात मलेरिया विभाग से परिवार कल्याण विभाग में आ गए। बाद में ये जिला स्वास्थ्य षिक्षा एवं सूचना अधिकारी के पद पर रहे 1998 में वे सेवानिवृत्त हो गये।

सन् 1978 में आजमगढ़ से उन्होंने अपना स्थानान्तरण लखनऊ करा लिया और पूर्वांचल की भॉति यहां भी कवियों और लेखकों से इनका गहरा परिचय हो गया । अब वे भी गोष्ठियों में जाने लगे । सन् 1975 ई0 में जब आपातकाल लगा तो उस समय व्यवस्था के विरूद्ध सीधे–सीधे कुछ कहा जाना सम्भव नही रहा । अतः उनके गीतों में एक नया मोड़ आया और गीत प्रतीक , बिम्ब और व्यंजना के साथ वे प्रस्तुत करने लगे । जिसमें नव्यता स्वयं प्रस्फुटित हुई किन्तु उन्हें ज्ञात नही था कि जो वे लिख रहे हैं वही नवगीत है किन्तु जब बाद में उनके काव्य संग्रह छपने लगे तो समीक्षकों ने उसे नवगीत नाम से अभिहित किया । इस प्रकार कुछ उनकी निजी परिस्थितियों ने तथा कुछ देषकाल की परिस्थितियों ने उन्हें नवगीतकार बना दिया।

नवगीतकार मधुकर अष्ठाना को लगभग एक सौ पुरस्कारों से नवाजा गया है। जिनका वर्णन नही है।

शब्द षिल्पी मधुकर अष्ठाना प्रतिभा सम्पन्न षीर्ष नवगीतकारों में अपना स्थान रखते है। इनकी रचनाएं सामाजिक सरोकारों से परिपूर्ण है । ये सामाजिक जीवन के प्रति प्रतिबद्ध रचनाकारों की सर्वाग्रिम श्रेणी में अपना अमिट स्थान बना चुके हैं । इनके नवगीतों में मानवीय मूल्यों का समावेष है । ये जीवन के सभी आयामों पर अपनी सतर्क दृष्टि जमाये रखने वाले रचनाकारों में आते हैं। इनके नवगीतों में मानवीय मूल्यों का षाष्वत रूप बडी प्रबलता के साथ मुखरित हुआ है। इन्हें जहां कहीं भी सामाजिक विद्रूपता दिखाई देती है उसे ये बड़े ही साहस के साथ प्रस्तुत करते हैं।

इनके नवगीतों में महत्वपूर्ण है सामाजिक चेतना। इन्होंने अपने समय के समाज को बडी ही सूक्ष्म दृष्टि से पढ़ने का प्रयास किया है। इनके सामाजिक याथार्थ की अनुभतियां पायः स्वयं भोगी हुई स्थितियों पर अवलंबित हैं। साथ ही दूसरों के अनुभवों को ग्रहण कर उन्हें अपना लेने की क्षमता का अद्भुत परिचय देती है।

# तृतीय अध्याय

मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का भावसौंदर्य –

(क)– मध्यम वर्गीय जीवन का सौंदर्य

(ख)– वेदनानुभूति और मानवीय संकट

(ग)– परम्परागत बनाम आधुनिकता

(घ)– लोकतत्व से जुड़ाव

(ड.)– सामाजिक परिवर्तन के स्वर

(च)– आधुनिक जीवन की विसंगति

(छ)– स्वचेतनाभिव्यक्ति

(ज)– सौंदर्यानुभूति और उसका स्वरूप

मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में कृतिमता का लेषमात्र भी समावेष नही है । उनके प्रत्येक गीत सरल , सहज एवं मौलिक हैं। उनके गीत महलों से झांककर नही लिखे गये हैं बल्कि परिवेष रहन–सहन रीति–रिवाजों के बीच इन गीतों के भाव ग्रहण किये गये हैं । अष्ठाना जी ने मध्यम वर्गीय गाम्य जीवन से जुड़े अनेक नवगीतों का सृजन किया है।

अष्ठाना जी ने वेदनानुभूति और मानवीय संकट से जुड़े अनेकानेक नवगीतों का सृजन किया है जो भावात्मक स्तर के हैं । ये गीत ऐसे है जो मौलिकता के साथ मार्मिकता का भाव पैदा करते हैं। 'गुलषन से बयावां तक' नामक गजल संग्रह में लिखते है–

''गुलषन से बयावां तक चले आये मगर

अपनी बरबादी की हमको खबर अब तक नही''

आज के वैज्ञानिक विकास के साथ–साथ मनुष्य की चेतना ने भी विस्तार लिया है । उसने भारतीय संस्कृति , इतिहास और साहित्य को विचार तत्व से जोड़कर मनुष्य के विकास की सम्भावनााओं को तलाषा भी है। जिस बुद्धि धन और बल को विष्व की विकसित षक्तियों ने अपने पाकेट मे भरने की भरपूर कोषिष की जिसे देखकर अन्य देषों का जनमानस हवा मे हाथ मार रहा है। उन जटिल परिस्थितियों में भारतीय मनीषियों ने चेतना के अनेक स्तरों पर प्रकाष तरंगो की भांति सदियों से देखा–परखा है।

इधर नवगीत ने अनेक संवेदनाओं को बचाये रखने के हर सम्भव प्रयास ही नही किये, बल्कि रूढ़ियो , जर्जर मान्यताओ को दूर करने के हर सम्भव प्रयास भी किये ।

मधुकर अष्ठाना अपने नवगीतों के मध्यम से विसंगतियों एवं विडम्बनाओं पर कठोर प्रहार किया है । उनका साहित्य आनन्द विधायी ही नही, प्रत्युत जागृति का नियामक भी है। उनके नवगीत लोकतत्व से दूर नही हो पाये । मूलतः ये भारतीय संस्कृति के उद्‌गाता हैं स्वस्तिवाचक एवं युगचेत्ता साहित्यकार हैं।

लोक तत्व से सम्बन्धित एक गीत देखिए–

''घेरि–घेरि अंगना में बरसै बदरिया

सखिया सहेलरी सुनावैली कजरिया

पपिहा कऽ विरिथ पुकार हो

अंगना भइल अन्हियार हो''

काव्य के क्षेत्र में संवेदना का जो रूप उभरता है उसमें कारूण पक्ष की भूमिका तुलनात्मक दृष्टि से विषेष महत्वपूर्ण होती है। संवेदना जब दुःखात्मक कारणों से जागृत होती है और उसका काव्य मे रूपायन होता है तो वह रचना माधुर्य से ओत–प्रोत हो जाती है जिसके परिणाम स्वरूप काव्य दुःखात्मक से सुखात्मक उपलब्धि प्राप्त कर लेता है। मधुकर अष्ठाना इसी दुःखात्मक संवेदना के प्रतिनिधि नवगीतकार हैं। इन्होंने षैषवावस्था से ही विसंगति और विषमता की अनुभति की, जो जीवन के अंतिम पडाव पर पहुंचकर भी रंच मात्र भी कम नही हुई । उनके नवगीतों से उनका जीवन संघर्ष झांकता है जिसमें आनुभतिक दुःखात्मक संवेदना की पराकष्ठा है। जिस कारणों से उनका जीवन कष्टमय रहा उसी के खिलाफ अपने नवगीतों में विद्रोह का स्वर बुलन्द किया–

'' अधरों पर बिठा दिये पहरे

आवाज डूब गयी गहरे

चीख–चीख कोई अब क्या करे

पंछी पर मारते डरे–डरे''

## चतुर्थ अध्याय

मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का सांस्कृतिक सौंदर्य

(क)– मल्यबोध

(ख)– प्रकृति और नारी

(ग)– प्रणय और जिजीविषा

(घ)– यथार्थता

(ड)– नगर एवं ग्राम्यबोध

(च)– सांस्कृतिक पतनशीलता

(छ)– प्रकृति का मानवीकरण

(ज)– लोकमंगल का भाव

(झ)– दार्षनिक चेतना

(ञ)– युगबोध

(ट)– अन्ध विश्वास का विरोध

आज समकालीन नवगीत जिन जीवन – मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के प्रति संवेदना व्यक्त की है, वह अतुलनीय है। यही नही उसने व्यक्ति को और समाज के समूचे व्यक्तित्व को एकरूपता प्रदान करते हुए जीवन मूल्यों को स्थापित करने की सचेष्टता दिखायी है। गीत की समय सारणी पर इन जीवन–मूल्यों की एक लम्बी लिस्ट बनायी जा सकती है।

उदाहरण स्वरूप – आंचलिक संवेदना, सामाजिक सारोकार , मानवीय संवेदना , उत्तर आधुनिकता, वैष्वीकरण , प्रेमिल भावों की अभिव्यंजना तथा वैज्ञानिक बोध आदि।

गीतकाव्य में नवगीत का मूल तत्त्व मानवीय संवेदना का होता है अराजक और असामाजिक तत्त्वों के प्रति आक्रोष तथा पीडितों के प्रति सहानुभूति मूलतः मानवीय संवेदना की प्रतिक्रिया प्रदर्षित करते हैं । नवगीत में जहां अमानवीय व्यवहार करने वालों के विरूद्ध असंतोष व्यक्त हुआ है वहीं नवगीत में प्रकृति को नारी स्वरूप वर्णन भी खूब हुआ है।

श्रेष्**ठ** नवगीतकार मधुकर **अ**ष्ठाना ने भी प्रकृति का नारी रूप में चित्रण किया है–

''सांझ की देहरी पर। खडी यामिनी

राम जाने कहां । रह गयी भामिनी''

साठोत्तरी कविता की एक धारा नवगीत की है । इसमें उन्मुक्त जीवन, जातीय संस्कार , जातीय परिवेष , लोकचेतना और संस्कृति से जोड़ें रखने की सहज प्रवृत्ति विद्यमान है। अष्ठाना के नवगीतों में आंचलिक धरातल पर सौंदर्य को जानने और पहचानने की गहरी ललक स्पष्ट दिखाई देती है । भारतीय अस्मिता की पहचान बनाये रखने के लिये अष्ठाना जी ने संवेदना और सौंदर्य दोनों को तलाषा । इनके नवगीतों में जिजीविषा संघर्ष की चेतना तथा माटी की पहचान है। इस अपनी माटी की पहचान बनाये रखने वाले नवगीतकारो में मधुकर अष्ठाना का नाम सर्वविदित है। इनके नवगीत जहां प्रणय और जिजीविषा की कवायद करते हैं वहीं यथार्थ भूमि पर अपने नवगीतों को जन्म भी देते है। वे अपने नवगीतों के माध्यम से यथार्थ से वाकिब कराते हैं –

''जाग गया उन्मुक्त प्रदूषण

कण – कण भरा जहर

उतरा रातों रात यहां पर

एक पिषाच नगर

आये चोर उचक्के और

ठगों के संग मंगते

सबके सो जाने पर

यहां जेब कतरे जगते

बिकी आस्था, अवरोधों की

अब खुल गयी डगर''

मधुकर अष्ठाना अपने नवगीतों में मुख्यतः तीन बातों पर विषेष बल दिया है। इन्होंने अपने नवगीतों में मुख्यतः मानवता, जामाजिक न्याय और जीवन की जटिल अवस्था इसके अलावा इनके नवगीतों में नगर एवं ग्राम्यबोध, सांस्कृतिक पतनषीलता , युगबोध, लोकमंगल का भाव, अन्धविष्वास का विरोध , प्रकृति का मानवीकरण तथा दार्षनिक चेतना आदि आसानी से मिल जाते हैं। मधुकर अष्ठाना प्रगतिषील चेतना के कवि हैं । प्रगतिषील चेतना के कवियों में आक्रोष के स्वर प्रबल होते हैं। इन कवियों ने सामाजिक , राजनीतिक तथा आर्थिक ष्षोषण के प्रति प्रबल आक्रोष व्यक्त किया है। अष्ठाना की कविता का आधार यथार्थवाद है जैसा इन्होंने देखा वैसा ही लिख दिया । ये हर समय आने वाले कल से दो–दो हाथ करने को तैयार बैठें हैं–

''अंगारो से नही चमकते ,
और कहीं तारों से।
स्वागत को तैयार सदा हम
आने वाले कल से''

ये समाज की जर्जर मानसिकता के खिलाफ ही अपना बिगुल बजाते हैं । वे समाज की रूढ़ियों से मुक्त कराने का अव्हान करते हैं। ये नारी शोषण , साम्प्रदायिक्ता , धर्मांधता ,कुरीति , वर्ग संघर्ष सामन्तवादी प्रवृत्ति और नौकरसाही का प्रबल विरोध करते हैं।

नवगीत में इन्होंने माध्यमवर्गीय समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था, नरी के प्रति सजगता तथा बुद्धि– चातुर्य का बखूबी चित्रण किया है।

इन्होंने अपने नवगीतों में मध्यमवर्ग की विवषता, असमर्थता , टूटती हुई सामाजिक आस्था, आधुनिक अमानवीयता , पलायनवादी प्रवृत्ति , महानगरों की तरफ ग्रामीणों का पलायन, सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों का चित्र उकेरा है। उपर्युक्त सभी विद्रुपताओं को सामाजिक पटल पर रखना एक कवि की काव्य– कुषलता का परिचय है।

## **पंचम अध्याय**

मधुकर अष्ठाना के नवगीतों मे विमर्ष

(क)– स्त्री विमर्श

(ख)– दलित विमर्श

(ग)– युवा विमर्श

(घ)– आर्थिक विमर्श

मधुकर अष्ठाना के नवगीतों और उनकी विचार धारा में समय और समाज को देखने की प्रगतिषील दृष्टि है जिसमें तार्किकता का समावेष है। साथ ही मूल्यों के क्षरित होते युग और सांस्कृतिक अवमूल्यन के प्रति नवगीतकार की टीस भी है। आज समाज बदला है मनुष्य की सोच बदली है तो साथ ही साथ मनुष्य की परिस्थितियां भी बदली हैं । इस लिये नवगीतों में बदलाव भी स्वभाविक है। मधुकर अष्ठाना अपने समाज की एक इकाई है। इकाई होने के नाते इनके नवगीतो मे अतृप्ति की वह बीज षक्ति है जो प्रेरक तत्व बनकर प्रत्येक जीवन मे सक्रियता की चेतना और सार्थकता प्रदान करती है। चाहें राजनीतिक धरातल हो चाहे सामाजिक इनके गीत चैतरफा प्रहार करते हैं । इनके नवगीतों में सामाजिक संवेदना है । नवगीतकार ने अपने समय के समाज को अनुषीलन करने का प्रयास किया है । इनके नवगीतों की एक खास विषेषता है कि इनके नवगीत अन्तर्वस्तु के नये क्षितिजों को तलाषा है। यही कारण है कि अष्ठाना के गीतों में सर्वहारा वर्ग 'षोषित' श्रमजीवी 'नरी विमर्ष' , यूवा विमर्ष आर्थिक विमर्ष एवं तृतीय लिंगी विमर्ष आदि वह सब कुछ विद्यमान है जिसकी हम अपेक्षा करते हैं।

नवगीतकार अपने नवगीतों से यह संदेष देना चाहता है कि भारत को स्वतंत्र हुए क्यों न 75 साल हो गये हों लेकिन सामाजिक , आर्थिक और मानसिक रूप से आज भी हमारा देष पिछडा है । परिवेष बोध ने जो हमें दिया उसमें मूल्यहीनता , पष्चात्य सांस्कृतिक , और आत्मीय रिष्तों में घुटन– रिसाव , विभाजित व्यक्तित्व की पीडा ने आधुनिक जीवन की संत्रास त्रासदी को हर कोण से जिया–

''भूख–प्यास घर–घर रीते। जूठे बासन खंगारती

यात्राएं दिषाहीन है। बिके एक–एक सारथी''

भारत जैसे देष ने जाति –पांति ऊंच – नीच का भेद भाव मिटाना टेढी खीर है । कवि इस भेद–भाव का कट्टर विरोधी है। इसी जाति –पाति का आधार बनाकर लोग तब तक भेद–भाव करते रहते हैं जब तक भुक्त भोगी आर्थिक रूप से सक्षम नही हो जाता है। आर्थिक रूप से मजबूत लोगों के साथ तो रोटी–बेटी का सम्बन्ध बनाने से बिल्कुल नही हिचकते । ठाकुर प्रसाद सिंह ने बंषी और मादल मे इस समस्या को उठाया है–

''मेरे पिछवारे । लाल चन्दन है

तुम ऊपर टोले के । मै निचली गांव की

राहे बन जाती है रे । कडियां पॉव की

समझो कितना मेरे प्राणो पर बन्धन है''

इसी भॉति मधुकर अष्ठाना 'ओठे हुए सच' के स्थान पर भोगे हुए सच की संवेदना है।

## षष्ठम अध्याय

मधुकर अष्ठाना के नवगीतों का षिल्प वैषिष्ट्य

(क)– अलंकार योजना

(ख)– रसतत्त्व की प्रधानता

(ग)– बिम्ब प्रतीक एवं मिथक योजना

(घ)– भाषा संस्कार

(ङ.)– गीत रचना कौशल

नवगीत के भाव–सौंदर्य और विचार सौंदर्य के उपरान्त उसके षिल्प सौंदर्य का विवेचन आवष्यक हो जाता है। भाव की कला ही तो षिल्प है । और षिल्प की विधायनी षक्ति भी तो भाषा में ही तो निहित होती है। षिल्प में अलंकार , रसतत्व , बिम्ब , प्रतीक एवं मिथकादि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अष्ठाना जी के नवगीतों में अनायास विभिन्न प्रकार के अलंकारों का संयोजन हो गया है। इनके गीतों में बिम्ब प्रतीक एवं मिथक योजना दर्षनीय है–

''बाबा लिए सुमिरनी झंखै

दादी को खटवांस

जाए सब

परदेस जा बसे

घर मे है बनवास ''

आसय यह है कि नयी पीढी का अपनी पिछली पीढी से बात–व्यवहार बदल गया है । संवाद की भाषा बदल गई है । उसमें अवसरवादी, मर्यादा की तरलता गायब हो गयी है।

अष्ठाना जी ने अपने नवगीतों में जो मिथक रचा है वह दृष्टव्य है–

“उतरा नही कभी । विक्रम के
कंधे से वैताल
गूंगे , अंधे , बहरे । रहे बाजते
अपने गाल ।

सौंदर्य – निर्माण प्रक्रिया में भावों के सहज प्रस्फुटन तथा वौद्धिक चेतना में आत्मीयता की अन्विति अनिवार्य तत्व है। इनके अभाव मे गीतकार की सीमित मानसिकता , पूर्वाग्रह ग्रस्तता , कृतिम मनोवृत्ति और ओढ़ी हुई नवता का ही पता गीत प्रदान करते हैं। भाव और विचार का सहज–साधु समन्वय ही रचना को सौंदर्यषील–सम्पन्न बनाता है। नवगीत अपने अभ्युदय काल से ही ग्रामोन्मुख रहा है। परन्तु ध्यातव्य तथ्य यह है कि उसकी यह यथार्थोन्मुखता अपने परिवेष के प्रति ललक , उत्साह उमंग आदि स़भी कुछ भाव के स्वर पर ही अधिक है। वैचारिक स्वर पर नवगीतकार नागर जीवन के प्रति अधिक अनुरक्त है। भाव एवं विचार के इस द्वैत से ही नवगीत का सर्जन होता है।

## <u>सप्तम अध्याय</u>

21 वीं सदी के प्रमुख नवगीतकार और मधुकर अष्ठाना

(एक तुलनात्मक अध्ययन)

1– डॉ0 ओमप्रकाष सिंह एवं मधुकर अष्ठाना

2– प्रोफेसर देवेन्द्र षर्मा ‘इन्द्र’ एवं मधुकर अष्ठाना

3– माहेष्वर तिवारी एवं मधुकर अष्ठाना

4– नचिकेता एवं मधुकर अष्ठाना

उपर्युक्त नवगीतकारों का मधुकर अष्ठाना के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया है जो निम्न बिन्दुओं पर आधारित है–

1– प्रतीक

2– बिम्ब

3– मिथक

4– मूल्यबोध

5– संवेदना और सौंदर्य

6– अलंकार योजना

हिंदी गीत कविता की सबसे बड़ी पहचान उसकी लोक से सम्पृक्ति तथा आधुनिक समकालीन अभिव्यक्ति है। बड़े जलसा घरों के पर्दों के पीछे सिसकती हुई आम घुटन है। आततायी प्रपंचों के निषेध के साथ कलुषित–व्यवस्था , स्वार्थी सियासत के प्रति अनुराग में मानवीय कविता–नवगीत जमाता है। हम सब में बंधते है, सब नवगीत में बांधता है । लोटा लिये गली सडक के किनारे खडी स्त्री की आंखों में मर्यादित भारतीय लाज नवगीत है। इन सभी रीतियों–कुरीतियों के भावाभिव्यक्ति के कवि प्रतीक , बिम्ब , मिथक आदि का सहारा लेता है। आलोच्य नवगीतकारों के गीतों का रूप विधान वस्तुगत भंगिमावों एवं अन्दर की लयात्मकता के योग से सम्मिलित है। जीवन और जगत के बीच बिम्ब , प्रतीक और उपमान नई अथवत्ता लेकर अपना स्थान ग्रहण करते हैं। इनके गीतों की भाषा ग्रामांचलता के अंचल में अठखेलियां करने वाली बोली से लेकर परिनिष्ठित भाषा का मिश्रित रूप है। इनके नवगीतों में जहां कहीं भी नई कविता की बौद्धिकता का ताल मेल हुआ वहीं बिम्ब की सृष्टि हुई है । इसके विपरीत षब्द बिम्बों और प्रतीक बिम्बों का आविर्भाव हुआ है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

'' घिर गये हैं

उल्लुओं से

नीलकण्ठी गांव''

यहां नवगीतकार ने दो प्रतीकों को चुना है – उल्लू और नीलकण्ठ । यहां उल्लुओं से आषय निर्बुद्धि और बेवकूफ से है तो नीलकण्ठी से आषय मीठी वाणी बोलने वाले और मधुर व्यवहार करने वाले लोगों से है।

इन प्रतीकों के माध्यम से कवि ने समाज के खोखले पन को दिखाया है। डॉ0 ओमप्रकाष सिंह की भांति आष्ठाना ने भी कुछ ऐसे ही प्रतीक ग्रहण किये हैं–

''यही नदी है

पहले जिसमें

बडी–बडी नावें चलती थी

और यहां से दूर देष जाने की राहें खुलती थी''

नवगीतकार ने इस प्रतीक बिम्ब के द्वारा क्रूर समाज की करतूतियों का पर्दाफास किया है जिसकी जगह से प्रतीक उपादानों का रूप परिवर्तित हो गया है ।

ऐसे ही सुविख्यात नवगीतकार देवेन्द्र षर्मा 'इन्द्र' ने अपने प्रतीक एवं बिम्ब योजना के द्वारा समाज की विकृति व्यवस्था का पर्दाफास करते हैं–

''अब तिमिरि के सूर्य डंसते जा रहे हर दृष्य को ,

अस्तगिरि पर जा छिपी सूरज अलक्षित–गारूड़ी ।

कुहासे का बाज उडता है दबाये चोंच में

रोषनी की छुद्र गौरैया अधर में जो मुड़ी ।। ''

माहेष्वर तिवारी सहित आलोच्य नवगीतकारों के गीत /नवगीत गहन संवेदना की सहज अभिव्यक्ति है जो न तो कृतिम है और न ही दुरूह है । लेकिन इनके नवगीतों की भावसम्यता विभिन्नात्मक है । जहां मधुकर अष्ठाना पौराणिकता से बहुत सी चीजों को ग्रहण करते हैं वहीं दूसरी तरफ माहेष्वर विवारी प्रकृति के सहारे प्रतीकों का निर्माण करते हैं –

''हमारे सामने

एकझील है

नदी बनती हुई

एक नदी है

महासागर के अगाधता की

खोल चढाये हुए

एक समुद्र है

दुविधा के ज्वार–भाटा में

फंसा हुआ। ''

माहेष्वर तिवारी नवगीत विधा के भारी–भरकम नवगीतकार हैं । जब–जब नवगीत की संवेदना और युगीन संदर्भों की बात होगी तब– तब माहेष्वर तिवारी के नवगीतों का सृजनात्मक उल्लेख होता रहेगा।

मधुकर अष्ठाना की ही भांति आलोच्य चारों नवगीतकारों (डॉ ओमप्रकाष सिंह , प्रो0 देवेन्द्र षर्मा 'इन्द्र' माहेष्वर तिवारी और नचिकेता तिवारी) के बिम्बो मे भी हर्ष–विषाद , ही नही सौंदर्य की गहन अनुभतियों के साथ जीवन के विविध छवियों के भी दर्षन होते हैं।

अष्ठाना जी ने अपने बिम्बों को बहुत ही सौंदर्य पूर्ण और प्रभावी बनाया है। आलोच्य विद्वान अपने नवगीतों मे किसी भी अनुभूति को मूर्तवत करते वक्त ऐसी कल्पना कभी नहीं करते कि उसका मुख्य अर्थ ही विलुप्त हो जाये और बिम्ब मात्रा कलात्मक चमत्कार ही बनकर रह जाये। कल्पना के रंगो से निर्मित प्रेम की अंगड़ाइयों में रचे ये बिम्ब कितने सटीक और सौंदर्यमय बन गये हैं–

''उमडता सिंधु/अपने रंग पर

सरिता बहे मंथर

मिले आतुर तृषा को

तृप्ति झरते मेघ से

निर्झर ''

बिम्बो के भेद–प्रभेद या किसी अन्य दृष्टिकोण से भी देखा जाये तो भी अष्ठाना के नवगीत आलोच्य विद्वानों के नवगीतों पर कमोवेष भारी पडते है । षोषित समाज के यथार्थ का चित्रण तो वे कुछ ही पंक्तियों में कर देते हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

''नगर वधू सी रात हो गई

दिवस हुआ बंजरा ''

कुल मिलाकर अष्ठाना जी के बिम्ब और प्रतीक विधान तुलनात्मक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध हैं । अपने बेहद कलात्मक और अनुभूति प्रवण बिम्ब विधान के कारण अष्ठाना के नवगीत बहुत ही प्रभावषाली और ह्रदयग्राही बन पड़े हैं।

षब्द–षिल्पी अष्ठाना जी को भले ही कभी मखमली बिस्तर न नसीब हुआ है , उन्हें भले ही राजनीतिक षिकार बन जाने के चलते ऊंचा सिंहासन न मिला हो , भले ही प्रारम्भ में उन्हें पत्र–पत्रिकाओं में स्थान न मिला हो, लेकिन आज वे लोगों के दिलों में अपना स्थान अवष्य रखते हैं। अष्ठाना का अनुभव क्षेत्र जितना विस्तृत है उससे कम विस्तृत उनका रचना संसार नही है। उन्होंने जीवन में जिन बातों को सिद्दत से महसूसा है , उनकी अभिव्यक्ति ही उनके नवगीतों में है। अस्तु , मधुकर अष्ठाना के नवगीतों से गुजर कर यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि उनके नवगीत संग्रह 'आहत संवेदना , का महाकाव्य' है, जो अपने मर्मस्पर्षी और प्रभविष्णु कथ्य और कहन–भंगिमा के कारण महत्वपूर्ण स्थान का अधिकारी है।

वास्तव में मधुकर अष्ठाना अवसाद , निराषा, अलगावबोध, संत्रास भाव , मन की अंधकार भरी गुफाओं में भटकने वाली चेतना के कवि हैं।